

गलतफहमी-6

“मैं अकेला कामुकता से सराबोर दो बहनों के नंगे
बदनोँ से खेल रहा था. वे दोनों लड़कियाँ मेरे लंड को
अपनी चूत में लेने कोई उतावली हो रही थी. ...”

Story By: Sandeep Sahu (ssahu9056)

Posted: सोमवार, अगस्त 14th, 2017

Categories: [सामूहिक चुदाई](#)

Online version: [गलतफहमी-6](#)

गलतफहमी-6

नमस्कार दोस्तो, उम्मीद है कि कामुकता से सराबोर यह कहानी आप लोगों को पसंद आ रही होगी।

अब तक आपने कल्पना के रहस्य और उसकी दीदी आभा के बारे में जाना, अब मैं उनके साथ सेक्स करने वाला हूं, बल्कि हमारा प्रोग्राम तो शुरू भी हो चुका है। तो आप लोग भी आनन्द लीजिए।

कल्पना ने मेरे लिंग को एक अलग ही अंदाज से मुंह में लिया और मैंने आभा की लाल पेंटी खींच कर उतार दी, आभा ने मेरा साथ दिया।

पेंटी उतरते ही मैं आभा की साफ चिकनी मखमली योनि और उसकी पतली सी दरार को देख के पागल हो उठा, सच में ईश्वर ने आभा के हर अंग को बड़ी फुर्सत में तराशा है। उसकी योनि एकदम गोरी, बाल रहित थी, मूंगफली के दाने से थोड़ा ही बड़ा उसकी योनि का वो खूबसूरत सा दाना था।

मैंने उसकी चिकनी टांगों से जीभ फिराना चालू किया और फिर योनि के चारों ओर जीभ फिराने लगा, योनि की दोनों फांक आपस में चिपकी हुई सी लग रही थी, मैंने अपनी दो उंगलियों को चिमटी जैसा बनाया और उसे फैलाया अंदर का गुलाबी रंग और चिपचिपापन देख कर मुंह में पानी आ गया, ऐसा लगा मानो वनिला फ्लेवर की आईसक्रीम पिघल रही हो।

आभा ने ईस्स्सअस्स् करते हुए मेरे बालों को पकड़ के योनि में मेरा मुंह दबाना चाहा, पर मैं उसे और तड़पा रहा था, अब वो अपनी चूचियों को खुद मसलने लगी, मैंने उसकी खूबसूरत गहरी नाभि में जीभ फिराई और वहां से जीभ फिराते हुए योनि तक ले आया और चूत की दीवारों को चीरता हुआ मैं जीभ को नीचे से ऊपर तक चलाने लगा।



आभा पागलों की तरह बड़बड़ाने लगी- ओह संदीप वेरी गुड... और आहहह उहहह ईस्स्सस !

इधर कल्पना मेरा लिंग मजे से चूसे जा रही थी, बीच-बीच में वो मेरे लंड के जड़ तक अपना मुंह ले जाती थी, और फिर मुंह से निकाल कर नई शुरुआत करते हुए लंड चूसने लगती। उसका एक हाथ खुद की चूत पर चला गया था, वो अपनी पेंटी को साईड करके दाने को खूब रगड़ रही थी और अपने उन्नत उभारों को मसल रही थी। शायद उसे अपने कपड़ों से तकलीफ हो रही थी, तभी वो उठकर अपने कपड़े उतारने लगी.

उसे ऐसा करते देख मैंने उसे रोका और मैं खुद उसके कपड़े उतारने लगा. आभा भी साथ देने आ गई और उसने कल्पना के पिंक टाप को उतार फेंका.

टाप के उतरते ही सफेद ब्रा में कसे हुए उरोज को मैं देखता ही रह गया, इतने सुडौल की मानो दुनिया की सबसे हसीन मम्मों हों, मम्मों के बीच संकरी सी घाटी में गुम हो जाने का मन कर रहा था।

तभी आभा ने ब्रा की पट्टी कंधे से खींच दी, अब नंगी चूचियों को देखकर मेरी हालत और खराब होने लगी, उरोजों के मध्य लाल भूरे गोले बड़े ही आकर्षक लग रहे थे. उसके चूचुक उत्तेजना में एकदम तने हुए थे, उसकी आंखें हवस के मारे लाल हो गई थी, वो ढंग से खड़ी भी नहीं हो पा रही थी, उसने एक ओर आभा को दूसरी ओर मुझे थाम रखा था, मुंह से अह्ह्ह्ह ईस्स्सस जैसी आवाजें निकाल रही थी.

तभी मैंने उसके उभार को हाथों से सहलाया, उसकी छुवन ने मुझे बहुत ही कोमल और उत्तेजक अहसास दिया किंतु अभी वह सहलवाने के मूड में नहीं थी बल्कि उसे तो अभी रगड़ कर मसलवाना था, उसने कहा- संदीप जोर से दबाओ ना, शरीर में ताकत नहीं है क्या ?

मैंने उरोजों को साईड से बहुत जोर से दबाया, ऐसा करने से चूचुक उभर कर ऊपर उठ गये



तो मैंने तुरंत ही उसे मुंह में ले लिया, वो सिहर उठी और तभी दूसरी ओर आभा ने भी ऐसा ही किया...

अब वो आहहह की आवाज के साथ फड़फड़ा उठी। कल्पना ने पहले हम दोनों के बाल नोचे, सहलाये फिर खुद को पूर्ण आजादी देने के लिए ब्रा का हुक खोल कर पेट में लटक रहे ब्रा को खुद से अलग किया।

आभा उसके उरोजों के मर्दन में लगी रही और मैं नीचे बैठ गया, मैंने उसकी स्कर्ट पल में खींच दी, ऐसा करते ही पेंटी के ऊपर से ही उसकी चूत का उभार दिखने लगा, उसकी फूली हुई चूत ने बहुत रस बहा दिया था, पेंटी के अलावा भी जांघों पर रस नजर आ रहा था. मैंने जांघों के उस रस को जीभ से चाटना शुरू किया और गीली पेंटी को भी चूमने चाटने लगा, साथ ही साथ मैं चूत को पेंटी के ऊपर से दांतों से काटने लगा।

कल्पना कसमसाने लगी, तभी मैंने पेंटी की इलास्टिक दांतों में दबाई और नीचे की ओर खींचने लगा, उतरती पेंटी के साथ ही मेरी आंखें चौंधियाने लगी। मैं उसकी नंगी चूत की बनावट और खूबसूरती देख कर हैरान सा था।

क्या मूतने की जगह भी इतनी प्यारी हो सकती है ??

जी हाँ होती है ! मैंने देखी है और देख भी रहा हूँ।

छोटे-छोटे रोंये थे, चूत का मुंह हल्का खुला था शायद वो श्वास लेने की कोशिश कर रही हो।

चूत इतनी गर्म हो चुकी थी कि उसमें से भांप निकलने का आभास हो रहा था, उसकी खुशबू की मादकता में मैं मदहोश होने लगा और मेरी आंखें बंद हो गईं।

अब मैंने पूर्ण रूप से नग्न कल्पना को कमर से पकड़ के उठाया और डाइनिंग पर, जहां पहले आभा लेटी थी, वैसा ही लिटा दिया, आभा यंत्रवत तरीके से नीचे बैठ गई और मेरा लिंग मुंह में ले लिया। आभा भी लिंग चूसने में पूर्ण प्रशिक्षित थी, पर उसका अंदाज



कल्पना से जुदा था।

उधर कल्पना के पैर अलग-अलग दिशा में फैल गए और चूत किसी गुलाबी फूल की तरह लगने लगी, मेरी आंखें वासना से लाल होने लगी, खूबसूरत टांगों के बीच की गोरी चमड़ी बार-बार की रगड़ से भूरी हो गई थी, उसकी चूत में मांस लटका हुआ सा दिख रहा था, मैंने उसे हाथ में पकड़ कर खींचने जैसा किया और उसकी चूत को देखते ही कह दिया- तुम तो खूब खेली खाई हो जानेमन, वरना चूत का मुंह बिना हाथ से खोले पहले से ही फैला हुआ नहीं लगता।

कल्पना ने मुझे जोर से डांटते हुए कहा- मैंने तुम्हें पहले ही कहा था ना कि तुम्हें किसी बात से कोई मतलब नहीं होना चाहिए।

मुझे उसकी डांट से चुप होना पड़ा।

हालांकि बाद में कल्पना ने मुझे मैसेज में बताया कि उसका एक बायफ्रेंड है पर उसके बारे में उसकी दीदी पूरे तरीके से नहीं जानती, और जानती भी होगी तो हमारे बीच कभी नहीं आती। और वैसे ही मैंने दीदी जीजू के बीच कभी जाने की कोशिश नहीं की है।

पर ये बातें तो उस समय मुझे पता नहीं थी, और उत्सुकता तो फिर उत्सुकता ही होती है... तो मैंने फिर कहा- कुछ तो बात है ?? इस चूत की खूबसूरती और अनुभव के पीछे जरूर कोई तगडा लंड है।

ये सब मैं उसे उकसाने के लिए भी कह रहा था और उसके शरीर को सहला रहा था, उसके उरोजों को पूरी ताकत के साथ मसल रहा था, वह दर्द और मजे के साथ आहहह उहह कर रही थी.

उसने फिर चिढ़ते हुए कहा- कहा ना, ऐसी कोई बात नहीं है.. वो तो बस हम लोगों के पास एक बड़ा डिल्लो रखा है उसी के कारण तुम्हें मेरी चूत फैली हुई लग रही है।

डिल्लो की बात सुनकर मेरी आंखें चौड़ी हो गई, मैंने तुरंत डिल्लो देखने की मांग की तो



आभा उठ कर अपने कमरे से डिल्डो लेकर आई, लेकिन जब आभा डिल्डो लाने अपने कमरे की ओर जा रही थी तब उसके कूल्हों को देख कर मन उसकी गांड मारने को भी हुआ, पर यह बात मैंने जाहिर नहीं की क्योंकि अभी तो चूत ही नहीं मिली थी, तो गाड़ क्या फाड़ता।

आभा के आते तक मैं कल्पना की चूत की फांकों को हाथ से फैला कर चूत के अंदर तक जीभ घुसा के चाट रहा था. कल्पना ने मेरे बहुत सारे बाल नोचे और बदले में मैंने उसके मम्मों को ऐंठ दिया, हम दोनों ही इस दर्द का आनन्द उठा रहे थे, मैं चूत चाटने में लगा था तो मुझे पता भी नहीं चला कि कब आभा डिल्डो लेकर आ गई.

मैं कल्पना की चूत पर झुका हुआ था तो मेरी गांड ऊपर उठी हुई थी, शायद आभा को यह पोजीशन देख कर मेरी गांड में डिल्डो डालने की सूझी। उसने मुझे बिना बताये ही डिल्डो मेरी गांड में घुसा दिया.

मैं अचानक हुए हमले से चीख उठा- अररररे माददददर चोद.. उम्ह... अहह... हय... याह... मेरी गांड फाड़ दी रररर.रे.. कमिनी कुतिया.. निकाल डिल्डो बाहर... मैं नहीं सह पाऊंगा.

उसने भी कहा- क्यों जनाब, एक इंच ही गांड में घुसा तो चीख पड़े... और जब तुम मर्दों के नीचे लेट कर हम औरतें अपनी गांड में सात-आठ-नौ इंच का मोटा मूसल डलवाती हैं और तुम्हारे मजे के लिए दर्द सहती हैं तब तो तुम लोगों को हमारे रोने और चीखने पर आनन्द आता है.

यह कहते हुए उसने डिल्डो थोड़ा और पेल दिया.. मैं दर्द से बिलबिला उठा.. और गिड़गिड़ाने लगा.. मैंने चाटना छोड़ दिया तो कल्पना ने नीचे से अपना कूल्हा उठा कर मेरे मुंह पर अपनी चूत टिकाई और मेरी गर्दन पर जोर देकर मेरे मुंह को चूत में दबा दिया.. और जोर से चिल्ला कर कहा- पेलो दीदी, पूरा का पूरा अंदर डाल दो, सभी मर्दों के कर्मों की सजा आज इसी को देते हैं।



मैं डर के मारे कांप गया, तब उन्होंने कहा.. अब सोचो कि एक औरत कितना दर्द सहती है, और उसके दर्द के बदले मर्द उसे क्या देता है.. ?? धोखा...

मैंने कहा- पर मैंने तो आज तक किसी को धोखा नहीं दिया है.. और दर्द भी किसी को उतना ही दिया जितना मजे और सैक्स के लिए जरूरी हो, और फिर हर इंसान धोखेबाज भी नहीं होता ।

शायद मेरी बात उनको सही लगी, और फिर वो अपनी चुदाई में ध्यान लगाने लगी ।

अब आभा ने डिल्लो मेरी गांड में वैसे ही फंसा के छोड़ दिया मुझे अब भी बहुत ज्यादा दर्द हो रहा था, मुझे लग रहा कि मुझे गधा या घोड़ा चोद रहा है । और आभा ने मेरे लंड को चूसने के लिए पकड़ा, पर मेरा लंड दर्द की वजह से थोड़ा नर्म हो गया था, तो आभा ने कहा- क्या यार, बिना चोदे ही ढीले पड़ गये ?

तो मैंने कहा- यार इधर जान निकल रही है और तुम्हें लंड की पड़ी है ।

तब उसने अपने मजे की चिंता करते हुए डिल्लो मेरी गांड से एक झटके में निकाल दिया । डिल्लो मेरी गांड का मांस रगड़ता हुआ बाहर आया, और साथ ही मेरे मुंह से चीख बाहर आ गई ।

मैं लड़खड़ाते हुए जाकर सोफे पर बैठ गया ।

आभा उठ कर मेरे पास आई और मेरे सामने टी टेबल पर डिल्लो रख कर मेरे लिए पानी लाने गई, अब मैंने डिल्लो अपने हाथ में उठा कर देखा, मैं पहली बार ऐसी कोई चीज हकीकत में देख रहा था, पढ़ा सुना होना और उस चीज का अनुभव होने में काफी अंतर है । यह बात मैंने आज जानी ।

डिल्लो पानी कलर का, नर्म सा एक फुट लंबा और लगभग मेरे लंड जितना ही मोटा था, बनावट ऐसे थी कि दोनों छोर से चुदाई हो सकती थी । शायद इन लोगों ने इसे दोनों की एक साथ चुदाई को सोच कर ही मंगाया होगा ।



अब कल्पना भी उठ कर मेरे पास आकर जमीन में बैठ गई, और मेरे लंड को निहारने लगी, उसने मेरे लंड को बहुत आहिस्ते से हाथ में पकड़ कर दांतों में काटने जैसा करते हुए नशीली अदा के साथ मेरी आंखों में आंखें डाली और अपना कान पकड़ कर मुस्कुराते हुए सॉरी कहा.

मैंने उसके सॉरी और इस खूबसूरत हरकत का जवाब मुस्कुराते हुए उसके सर को पकड़ कर अपने लंड पर दबाते हुए दिया।

तब तक आभा पानी लेकर आ गई थी, मैंने पानी पिया और डिल्डो को उठा कर कहा- यार ये तो मेरे लंड के जितना ही है, फिर मुझे क्यों लग रहा था कि मेरी गांड में हाथी का लौड़ा घुसा है।

तो आभा ने जवाब दिया- जब आंख में तिनका पड़ जाये और चुभने लगता है ना.. तो वह बहुत बड़ा और दुखदायी लगता है। ऐसे ही जब हमारी सील टूटती है या हम दर्द में रहती हैं तो हमें सामान्य सा लंड हाथी का लंड लगता है। और जैसे बोर खुदवाते समय अगर जमीन पथरीली ना हो नर्म या भूरभूरा हो तो चाहे जितना मोटा पाईप डाल कर खुदाई कर लो कोई फर्क नहीं पड़ता, ऐसी ही चूत या गांड होती है, एक बार उसका कड़ापन चला जाए और वो थोड़ी ढीली हो जाए फिर उसमें कितना भी बड़ा लंड डालो कोई फर्क नहीं पड़ता।

हमारे बात करते वक्त कल्पना का लंड चूसना जारी था, और अब आभा भी जमीन पर बैठ गई और मैं सोफे पर ही बैठ कर दोनों के बालों को सहला रहा था, मेरा लंड फिर भीमकाय हो चुका था, गांड का दर्द कम हो गया था, तो मैंने पूरा ध्यान उन अनुभवी कन्याओं में लगाया।

मैं कल्पना के उरोजों को यथा संभव खींच और मसल रहा था।

फिर आभा ने मुझे भी सोफे से नीचे उतार कर और सोफे पर टिक कर बैठने को कहा, मैंने यंत्रवत बात मानी, अब तक हम आपस में बहुत खुल गये थे, और इशारों को भी समझने



लगे थे।

आभा ने कल्पना को इशारा किया तो वो उठ गई और आभा ने मेरे गाल का चुंबन करते हुए मेरे लंड के ऊपर खुद को सेट करते हुए लंड को पकड़ कर अपनी चूत में रगड़ा.. हाय... मैं बिना नशा किये ही मदहोश होने लगा, उसका स्पर्श ही अनोखा था... उसने पहले से अपनी गीली चूत में मेरे लंड का टोपा फंसा लिया और मेरे गले में अपनी बांहों का हार डाल कर झूल गई।

उधर कल्पना ने अपनी एक टांग सोफे पर मुझे क्रास करते हुए रखी जिससे उसकी खुली हुई चूत मेरे मुंह के सामने आ गई और वह मचल-मचल के चूत चटवाने लगी।

अब आभा ने दबाव बढ़ाया और लंड कुछ और अंदर तक ले गई। वो चाहती तो एक साथ ही पूरा लंड अंदर कर सकती थी, पर वो सच में अनुभवी थी, वो चुदाई के हर क्षण का मजा कैसे उठाना है, जानती थी।

अब हम तीनों ही कामुकता और वासना के गिरफ्त में थे।

आभा के इस अंदाज की वजह से मेरा लंड और भी अकड़ रहा था, और फूल के बड़ा लगने लगा था।

अब आभा ने लंड पूरा जड़ में बिठा लिया और उसकी आंखों से आँसू छलक आये, ये आँसू दर्द के थे, वासना के थे, खुशी के थे या और कुछ मैं नहीं जानता.. क्योंकि उन आंसुओं में मैंने सिर्फ अपने लिए कृतज्ञता देखी... वो मुझे धन्यवाद कह रहे थे।

ये मैं इसलिए कह सकता हूँ, क्योंकि आभा ने इस पल के बाद वासना में सराबोर होकर मेरे लंड की जो तारीफ करनी शुरू की, वो उसकी पूरी चुदाई तक अनवरत चलती ही रही।

कमरा हम तीनों की आहहह.. उहहह.. उचच.. आआउउचचच. ईईस्स्स्स् जैसे मधुर



आवाजों से गूँज उठा ।

आभा ने धीरे-धीरे अपनी गति तेज की और कल्पना ने अपने उन्नत उरोजों का मर्दन खुद करना शुरू कर दिया और अपनी चूत को मेरे मुँह में जोर से दबाने लगी ।

मैं समझ गया था कि अब कल्पना भी चुदाई के लिए तड़प रही है तो मैंने अपनी दो उंगलियाँ कल्पना की चूत में डाल दी और गोल घुमाने लगा । पर उसकी आग और बढ़ गई, उसने आभा को लंड से हटने को कहा ।

आभा ने भी उसकी तड़प को समझ कर जगह खाली कर दी पर इस बार हम तीनों ने अलग ही पोजीशन सैट की ।

कहानी जारी रहेगी..

आप लोगों को कहानी कैसी लगी, मुझे मेल करें..

ssahu9056@gmail.com

sahu83349@gmail.com



